सूरदास

पद का सार / प्रतिपाद्य

यह पाठ सूरदास द्वारा रचित **भ्रमरगीत** से लिया गया है। इसमें चार पद दिए गए हैं। चारों पदों में गोपियों तथा उद्धव के मध्य हुए संवाद को दर्शाया गया है। उद्धव गोपियों से कहता है कि वे कृष्ण को भूल जाएँ। गोपियाँ उद्धव की बात से हैरान हो जाती हैं। उसी समय एक भंवरा वहाँ से आता है और उसे आधार बनाकर वे सब उद्धव पर व्यंग्य करती हैं। पहले पद में गोपियों कहती हैं कि तुम भाग्यवान हो जो तुम पर कृष्ण के प्रेम का रंग नहीं चढ़ा है। हम तो कृष्ण प्रेम में डूब गई हैं। दूसरे पद में गोपियाँ कृष्ण के वियोग से उत्पन्न दुख का वर्णन करती हैं। तीसरे पद में गोपियाँ योग पर व्यंग्य करती हैं और स्वयं की दशा का वर्णन करती हैं। चौथे पद में वे कृष्ण से नाराज़ हैं कि मथुरा जाकर वे हमें भूल गए हैं।

पद का भाव सौंदर्य

(1) गोपियाँ उद्धव पर व्यंग्य करती हैं। कई उदाहरणों के माध्यम से वे उन्हें प्रेम से रहित मानती हैं। उनके अनुसार कृष्ण के समीप रहकर यदि उद्धव कृष्ण से प्रेम नहीं कर पाएँ हैं, तो यह उनके लिए आश्चर्य की बात है। उद्धव को वे कमल के पत्ते तथा तेल की गगरी के समान बताती हैं, जिन पर पानी का प्रभाव नहीं पड़ता है। गोपियों स्वयं को ऐसी चींटियों के समान मानती हैं, जो कृष्ण प्रेम रूपी गुड़ से चिपकी रहती हैं। वे अन्य कहीं जाना नहीं चाहती हैं।

(2) इस पद में गोपियों के विरह का पता चलता है। कृष्ण से अलग होकर उनकी दशा बहुत खराब है। वे कृष्ण के विरह में तड़प रही हैं। उन्हें लगता है कि उद्धव उस पर मरहम लगाने के स्थान पर योग संदेश लेकर आए हैं। यह उन्हें और कष्ट दे रहा है।

(3) गोपियों के लिए योग संदेश ऐसी ककड़ी के समान है, जिसे खाना उनके बस का नहीं है। वे तो कृष्ण प्रेम में रम गई हैं। अतः अब वह इसके अतिरिक्त किसी अन्य का सहारा नहीं लेना चाहती हैं। उनके अनुसार योग का संदेश ऐसे लोगों को देना चाहिए, जिनके मन भटकते रहते हैं। गोपियों का मन तो कृष्ण में व्याप्त है। अतः उन्हें योग का यह संदेश नहीं चाहिए।

(4) गोपियाँ कृष्ण से नाराज़ हैं। कृष्ण ने वादा किया था कि वे उनसे मिलने आएँगे लेकिन वे अपने वादे से मुकर गए हैं। उन्हें लगता है कि मथुरा जाकर कृष्ण चतुर हो गए हैं। वे चाहती हैं कि कृष्ण उनके साथ न्याय करें और अपना वादा निभाएँ।

गोपियों की चारित्रिक / स्वभावगत विशेषताएँ

- चतुर
- ज्ञानी
- विनम्र
- वाक्चातुर्य
- परम भक्त
- प्रेम के प्रति समर्पित

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

- तर्कपूर्ण उत्तर देने में समर्थ

भाषा शैली की विशेषताएँ

- मुहावरेदार भाषा
- **पद** छंद का प्रयोग
- परिष्कृत ब्रज भाषा
- व्यंग्य शैली का प्रयोग
- अलंकारों का सुंदर प्रयोग

पद का उद्देश्य

- मनुष्य में विचार विश्लेषण की क्षमता बढ़ाना तथा मानव मूल्य के प्रति आस्था जागृत करना।
- विद्यार्थियों में ब्रजभाषा में रचित साहित्य ज्ञान को बढ़ाना।
- विद्यार्थियों को ब्रजभाषा का ज्ञान देना।
- सगुण भक्ति का स्वरूप समझाना।

पद का संदेश

- यह पाठ हमें संदेश देता है कि जीवन में प्रेम तथा भक्ति को महत्व देना चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in